उपनिभादों में आगत प्रमुख वाक्यों की उपादेयता

डॉ. प्रमोद कुमार सिंह

उपनिशद् भारतीय ज्ञान–विज्ञान, घर्म–दर्षन एवं विविघ कोष–कलाग्रन्थों इत्यादि का आकर एवं आघार ग्रन्थ है। यद्यपि उपनिशदों में मुख्यरूप से ब्रह्मविद्या या आत्मतत्त्व का ही प्रतिपादन है तथापि इसमें विभिन्न नियमों के नियमन के साथ–2 मानवजीवन से जुड़े हर पहलुओं व परिस्थितियों से सम्बन्घित समस्याओं के समाघान का उपादान भी विद्यमान है। अनेकानेक नैतिक नियमों से निबद्ध, सामाजिक संवेदनाओं से संबद्ध और उत्प्रेरक उद्भावनाओं से अभीभूत उपनिशद् वे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं, जिसमें प्राणिमात्र के कल्याण एवं विकास की कामना की गयी है। मानवजाति को कर्तव्यपथ पर अग्रसर करने वाले, सदसद्विवेक बुद्घि को उत्पन्न करने वाले तथा षाष्वत सत्य का प्रतिपादन करने वाले उपनिशदों की उपयोगिता बहु–आयामी एवं अभिव्यापक है। उपनिशद् ऐसे पावन, पुनीत एवं प्रेरक प्रकाष–पुञ्ज है, जिसमें सम्पूर्ण मानवजाति का वास्तविक विकास प्रदर्षित है। वस्तुतः मोहमायावच्छिन्न मानवों के सकल–मल का प्रक्षालन करने वाले उपनिशद् वह ज्ञानगंगा हैं, जिसमें गोता लगाकर कोई भी मनुश्य गगनतुल्य नैतिकता प्राप्त करते हुये प्रज्ञावान पुरुश बनकर षाष्वत सुख या मोक्ष को अङ्गीकार कर सकता है।